Department of sanskrit

शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय
क्र.
दि.
राजनांदगांव (छ.ग.)

Programme outcomes :-

B.A.(Sanskrit):-

विय्दाथ्रथयंो को संस्कृ.1 त भाषा केकाव्यग्रथंो,व्याकरण ,छंद-अलंकार आदद केबुवनयादी स्तर ग्रथंो सेपररचय

की र्पावि तादक ि भाषा एिं सावहतय दोनंो को समझ लि।

संस्कृ.2 तसावहतय केवतहास केपूणज्ञान की र्पावि तादक विय्दाथी संस्कृग्रंथो से पररवचत हिो।

भारतीय संस्कृ .3 वत, भारतीय परंपरांओ तथा नैवतक मूलयंो का विकास।

M.A.(Sanskrit):-

विद््याथी संस्कृ.1 त माध्यम से अ्धययन करतेहुए न के िल संस्कृत का सै्दांवतक अवपतु व्यिहाररक

ज्ञान र्पाि करते हंैसंस्कृतसंभाषण कौशल का विकास करतेहुए संस्कृ त का संभाषण की

भाषा(Language of conversation)के रूप मंे विकास।

प्राचीन संस्कृ.2 त ग्रंथंो मंे वनवहत ज्ञान का अजणन कर भारतीय संस्कृवत एिं परांओ का अ्धययन।

साथ ही संस्कृ त केआधुवनक कवियो का अ्धययन कर संस्कृत के नीन सावहतय का ज्ञान र्पाि करना।

विद््याथ्रथयंो मंे नैवतक मूलयंो का विकास।.3

प्राचीन एिं.4 आधुवनक संस्कृत ग्रंथ,भाषाशात्स्र आदद विषयंो से संबंवधत शोध कायण को बढ़ािा।

Programme specific outcomes:-

B.A(Sanskrit):-

संस्कृ.1 त के प्राचीन ग्रथंो का बुवनयादी अ्धययन।

काव्य वनमाणण के.2 मह्त्ति तथ्यंो यथा-छनद,अलंकार आदद का बुवनयादी अ्धययन।

वशष्कक, सेना मंे.3 धमणगुर, पुरोवहत आदद के रूप मंेरोजगार के अिसर।

नैवतक मूलयंो का विकास।.4

शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय
क्र.
दि.
राजनांदगांव (छ.ग.)

M.A.(Sanskrit):-

संस्कृ.1 त केप्राचीन ग्रंथंो तथा भारतीय पर्मपराओ के विवभन्न पहलुंओ का आधुवनक पररपेक्य अध्ययन।

भाषाशात्र्सीय शोध के.2 अिसर।

योगविज्ञान, भाषाशात्र्स,आधुवनक संस्कृ.3 त कवि पररचय आदद विषय संस्कृकी आधुवनक पररपेक्य मंे

उपयोवगता वस्द करते हंै।

विष्कक,भाषिौज्ञावनक, सेना मंे.4 धमणगुर, पुरोवहत, लेखक आदद ष्केत्रीमरोंगार के अिसर।

Course outcomes:-

B.A. Part 1:-

व्याकरण का पररं.1 वभक अ्धययन करने से विय्दाथ्रथयंो का भाषा पर अवधकार स्थावपत होता है।

नीविपरक ग्रंथंो यथा-वहतोपदेश आदद के.2 अ्धययन से नैवतक मूलयंो की स्थापना।

संस्कृ.3 तसावहतय केइवतहास केअ्धययन केमा्धयम सेविय्दाथ्रथयंो का संस्कृग्रंथंो सेपररचय।

B.A. Part 2:-

व्याकरण के .1 अवर्गम स्तर का अ्धययन।

ि्कय रचना का अ्भयास वजससे.2 संस्कृत लेखन कौशल का विकास।

नागानंद, नीवतशतक जैसे.3 ग्रनथंो केअ्धययन से नैवतक मूलयंो का विकास।

संस्कृ.4 तसावहतय केइवतहास केअ्धययन सेविय्दाथ्रथयंो का संस्कृग्रंथंो सेपररचय।

B.A. Part 3:-

काय्व वनमाणण के.1 महत्िपूणण्थयंो जैसेछं द,अलंकार आदद का बुवनयादी अ्धययन।

संस्कृ.2 त वनबंध कौशल मंवृद्धि।

शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय
क्र.
दि.
राजनांदगांव (छ.ग.)

M.A. 1st semester :-

िद,उपवनषद इतयादद ज्ञान सेप1रपूणणग्रनथंो का अ्धययन।

पाली जैसी मह्त्िपूणण.2भाषाओ के अ्धययन सेभाषाशात्सीय शोध के आयामंो मंवृद्धि।

श्रीमभ्दगितगीता एिं.3 दशणन का अ्धययन आ्धयाव्तमक उन्नवत की ओर अर्गसर करता है।

सावहतयशात्स एिं.4काव्य विषयंो पर विद्याथ्यंो की िृ्द्धि होने से संस्कृसावहतय लेखन कुशलता मंवृद्धि होती है।

M.A. 2nd semester :-

िद तथा िदाङ्ग इतयादद ज्ञान से.1पररपूणणग्रनथंो का अ्धययन।

भाषीज्ञावनक के.2 रूप मंरोजगार के अिसर की प्राप्ति।

दिशन के.3 अ्धययन सेविद्याथ्यंो मंआ्धयाव्तमक ज्ञान की िृ्द्धि तथा योग जैसे ितणमान युग के्ासंवगक पक्ष

की ज्ञानप्राप्ति।

संस्कृ.4त सावहतय लेखन कुशलता मंवृद्धि।

M.A. 3rd semester :-

भारतीय संस्कृ.1 वत केविवभन्न पहलुंओ की ज्ञान प्राप्ति।रामायण, महाभारत, पुराण जैसेभारतीय संस्कृत के

आधार स्तमभ माने जाने िाले ग्रनथंो का ज्ञान।

काव्यशात्स, सावहतयशात्स तथा रस-्धिवन आदद काव्यशात्सीय त्थयंो के.2ज्ञान से संस्कृत सावहतय लेखन

कु शलता मंवृद्धि।

कौटिलीय अथणशात्स जैसे.3 ग्रनथंो का अ्धययन आथ्थक, राजनैवतक आदद पक्षंो के मह्ति का ज्ञान

प्रदर्शत करते हंै।

M.A. 4th semester :-

भारतीय सं्सकृ.1 वत केवि्सतृत ज्ञान की पर्ावि ।

सं्सकृ .2 त केआधुवनक कवियं ो केअ्धययन केमा्धयम सेसं्सकृ्त की ितणमान पर्ासंविकता सेविद्याथियं ो का परररचय।

छिीसगढ़ के .3 धाश्रमक ्सथलं ो केपररचय की पर्ावि।

काव्यशार्त्स, सावह्तयशार्त्स तथा रस-्धिवन आदद काव्यशार्त्सीय त्थयं ो .4 सेसं्सकृत सावह्तय लेखन कु शलता मेंिृव्द।

कौरिलीय अथणशार्त्स जैसे ग्रं .5 थं ो का अ्धययन आश्रथक, राजनैवतक आदद ष्केत्रं ो मेंसं्सकृ्त के महत्ि का ज्ञान प्रदश्रशत करते हंै।

शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय
क्र.
दि.
राजनांदगांव (छ.ग.)